सच्चाई का इज़्हार

(सत्य का प्रकटन)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

सच्चाई का इज़्हार

(सत्य का प्रकटन)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

पुस्तक का नाम : **सच्चाई का इज़्हार (सत्य का प्रकटन)**

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

अनुवादक : अली हसन एम.ए., एच.ए.

प्रथम संस्करण हिन्दी : जून 2013 ई.

संख्या : 1000

प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अन्जुमन अहमदिया क़ादियान-143516
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब, (भारत)

मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

ISBN : 978-81-7912-368-3

ٹائیٹل بار اوّل

رسالہ موسومہ بہ

سچائی کا اظہار

جسمیں عبداللہ آتھم صاحب رئیس امرتسر مسیحی کا بشرط مغلوبیت

اسلام لانے کا اقرارنامہ ہے اور نیز بعض

فاضل اور مستند علماء عرب اور شام

کی اس عاجز کی نسبت

تصدیق

ہے

مطبع ریاض ھند امرتسر میں چھپا

تعداد جلد ۷۰۰

قیمت ۶ پائی

प्राक्कथन

इस्लाम की सच्चाई को सारे विश्व में स्पष्ट करने और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सन्देश दुनिया के किनारों तक पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला ने अपने एक शूरवीर हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम को अवतरित किया। जिनकी पवित्र रचनाओं से बहुत से लोग आध्यात्मिक रूप से सन्मार्ग प्राप्त कर चुके हैं और अब भी प्राप्त कर रहे हैं। जिनकी पवित्र रचनाओं में से एक रचना ''सच्चाई का इज़हार'' इस समय आपके हाथों में हैं।

यह रचना मूल रूप से सन् 1893 ई. में उर्दू भाषा में प्रकाशित हुई। इस रचना में हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब ने अमृतसर के मसीही प्रमुख पादरी डिप्टी अब्दुल्लाह आथम साहिब का मुबाहसा ''जंगे मुक़द्दस'' में पराजित होने की शर्त पर इस्लाम स्वीकार करने का इकरारनामा भी दर्जा किया है और डाक्टर क्लार्क साहिब के उस विज्ञापन का भी वर्णन किया है जो उन्होंने 12 मई सन् 1893 ई. को लिखा था और अखबार ''नूर अफ्शाँ लुधियाना'' में भी परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित हुआ था । इस विज्ञापन का उद्देश्य यह था कि जन्डियाला के मुसलमानों को हज़रत मिर्ज़ा साहिब से बद्ज़न किया जाए, इसलिए मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और अन्य मौलवियों द्वारा हज़रत मिर्ज़ा साहिब के प्रति दिए गए कुफ्र के फत्वों का भी वर्णन किया, जो ''इशाअतुस्सुन्न:'' में फतावा-ए-तक्फ़ीर के नाम से प्रकाशित हुए।

जन्डियाला के मुसलमान इस विज्ञापन से तनिक भी भयभीत न हुए और मियाँ मुहम्मद बख़्श साहिब निवासी जन्डियाला ने पादरी साहिबों को मुँहतोड़ जवाब देते हुए लिखा कि :-

''हम ऐसे मौलवियों को स्वयं धूर्त और छली समझते हैं जो

इस्लाम समर्थक एक मुसलमान को काफिर ठहराते हैं।'' (सच्चाई का इज़हार, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 6, पृष्ठ 74)

इस रचना में वह विज्ञापन भी दर्ज है जिसमें अब्दुल हक़ गज़नवी, जिसने स्वयं भी मुबाहले की इच्छा जताई थी के अतिरिक्त कुफ्र का फ़त्वा देने वाले अन्य उलमा को भी उसके साथ मुबाहले में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया गया।

प्रचार व प्रसार विभाग क़ादियान वर्तमान इमाम जमाअत अहमदिया की स्वीकृति से इस रचना का हिन्दी भाषा में अनुवाद करवाकर पहली बार किताब के रूप में प्रकाशित करने का सौभाग्य पा रहा है। जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अलीहसन साहिब एम.ए. फ़ाज़िल ने किया है। इस में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों को अल्लाह तआला प्रतिफल प्रदान करे, और इस किताब को पाठकों की सन्मार्ग प्राप्ति का साधन बनाए। तथास्तु!

भवदीय

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर प्रचार व प्रसार विभाग क़ादियान

सच्चाई का इज़्हार

जिसमें अब्दुल्लाह आथम मसीही रईस अमृतसर का पराजित होने की अवस्था में इस्लाम स्वीकार करने का इक़रारनामा तथा अरब और शाम देश के कुछ मान्य विद्वानों का इस विनीत के संबंध में सत्यापन है।

शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी के अखबार इशाअतुस्सुन्ना से पादरी लोगों को जो विशेष सहायता पहुँची उसका वर्णन

डाक्टर हेनरी मार्टन क्लार्क एम.डी. मेडिकल मिशनरी अमृतसर की ओर से अमेरिकन मिशन प्रेस लुधियाना में एक अखबार इस विनीत के विरोध में 12 मई 1893 ई. को छपा है । जिसमें बटाला के मशहूर मौलवी शेख मुहम्मद हुसैन का एक रंग में धन्यवाद किया गया है वस्तुत: यहां ईसाइयों को कृतज्ञ होना चाहिए था, क्योंकि डाक्टर साहिब इस विनीत के विरुद्ध इस्लाम और ईसाई धर्म की आलोचना, छान-बीन एवं सच और झूठ के परखने के लिए शास्त्रार्थ स्वीकार तो कर बैठे परन्तु बाद में ध्यान देने के पश्चात डाक्टर साहिब पर कुछ ख़ौफनाक सी हालत छा गई। सत्य है कि इन्सान को ख़ुदा बनाने के समय मुक़ाबले से शरीर काँप जाता है । ख़ुदा, ख़ुदा ही है और इन्सान, इन्सान ।

چہ نسبت خاک را با قادرِ پاک

(अनुवाद :- मिट्टी की पवित्र सामर्थ्यवान ख़ुदा से क्या तुलना । अनुवादक)

अत: पादरी साहिबों को जब यह डर लगा कि ऐसा न हो कि इस्लाम के सद्मार्ग के सामने ईसाई योजना की सारी वास्तविकता प्रकट हो जाए तो यह कोशिश की गई कि यह शास्त्रार्थ किसी तरह स्थगित रहे तो अच्छा है और यह प्याला किसी तरह टल जाए तो उचित हो। इस डर और चिन्ता के समय में शेख जी से उनको खूब

सहायता मिली । कदाचित ऐसा लगता है कि शेख साहिब स्वयं सहायता करने के उद्देश्य से गुप्त तौर पर पादरी लोगों के पास गए होंगे क्योंकि डाक्टर साहिब ने जो मुझे पत्र लिखा है और इशाअतुस्सुन्ना के कुछ लेख लिखे हैं वह इबारत शेख जी की इबारत से बहुत मिलती-जुलती है । अगर शेख जी को क़सम देकर पूछा जाए तो सम्भवत: इन्कार भी नहीं करेंगे । जब नूर अफ़्शाँ अख़बार का वह परिशिष्ट जो 12 मई सन् 1893 ई. में छपा है और इस समय हमारे हाथ में है उसको ध्यानपूर्वक देखते हैं तो वह यही गवाही दे रहा है । अत: उसकी इबारत यह है :-

आप (हे जंडियाला निवासियो) एक ऐसे आदमी को (अर्थात इस विनीत को) बहस के लिए प्रस्तुत करते हो जिनको पहले तो एक मुसलमान व्यक्ति भी गुमान करना मुश्किल है । आप किन विचारों में ग्रस्त हो । क्या आपने वे फ़त्वे नहीं देखे जो पंजाब और हिन्दुस्तान में इस्लाम के विद्वान कहलाने वालों ने मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के प्रति प्रकाशित किए हैं । वे वर्णित फत्वों में यों लिखते हैं कि जो कुछ हमने प्रश्नकर्ता के जवाब में कहा और क़ादियानी के प्रति फ़त्वा दिया है वह सही है किताब व सुन्नत और उम्मत के विद्वानों के कथन इसके औचित्य पर गवाह हैं । सब मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे झूठे दज्जाल से बचें और उससे वे धार्मिक संबंध न रखें जो मुसलमानों में परस्पर होने चाहिएँ । न उसकी संगत में, न उसको पहले सलाम करें और न उसको निमन्त्रण दें और न उसका निमन्त्रण स्वीकार करें और न उसके पीछे नमाज़ पढ़ें और न उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ें। ये धर्म के चोर हैं, बीमारी बढ़ाते हैं । दज्जाल, कज़्ज़ाब धिक्कृत, अधर्मी, इस्लाम से बहिष्कृत काफ़िर अपितु सबसे बड़ा काफ़िर, अपवित्र खच्चरी, शैतान का भटकाया हुआ और दूसरों को भटकाने वाला, सुन्नत व जमाअत से बाहर बहुत बड़ा दज्जाल अपितु दज्जाल का चाचा और धर्म द्वारा दुनिया कमाने वाला, और

यदि विस्तारपूर्वक देखना हो तो किताब ''इशाअतुस्सुन्नतुल नबविय:'' मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब से मंगवाकर देख सकते हैं जिसका मूल्य एक रुपया आठ आना है लाहौर से मिल सकती है । आप अजीब सुस्ती में पड़े हैं कि अब तक इस किताब को नहीं देखा। शाबाश आप पर और जंडियाला के मुसलमानों की हिम्मत पर ! जिसका जनाज़ा भी वैध नहीं उसी को आपने पेशवा नियुक्त किया। शाबाश साहिब शाबाश ! आपकी यह सुधारणा ।

अब ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि पादरी साहिब ने मियाँ बटालवी और उनकी इशाअतुस्सुन्ना से क्या कुछ फायदा उठाया है और हमारे काफ़िर कहने वालों ने विरोधियों को कैसा अवसर दे दिया परन्तु यह ख़ुशी का स्थान है कि उस फ़ित्ने से भरे हुए पत्र को देखकर भी जो इशाअतुस्सुन्ना के हवाले से लिखा गया था, जंडियाला के दृढ़ ईमान रखने वाले लोग थोड़ा सा भी नहीं डगमगाए और मियाँ मुहम्मद बख़्श ने जंडियाला से पादरियों को बड़ा मुँहतोड़ जवाब दिया और लिखा कि कोई धर्म मतभेद से खाली नहीं और ईसाई भी इससे बाहर नहीं और ऐसे मौलवियों को हम स्वयं उपद्रवी समझते हैं जो इस्लाम के समर्थक एक मुसलमान को काफ़िर ठहराते हैं ।

सर्व साधारण के लिए सूचना

शेख बटालवी साहिब एडीटर इशाअतुस्सुन्ना ने दो बार यह पक्का वादा किया था कि मैं उस पत्र का जवाब जो क़ुर्आन करीम की अरबी भाषा में व्याख्या और क़सीदा को आमने-सामने बैठकर लिखने के बारे में इस तरफ से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने की दृष्टि से लिखा गया था, अमुक-अमुक तिथि को अवश्य भेज दूँगा वादा भंग नहीं होगा । अब इन दोनों तिथियों पर सोलह दिन और बीत गए और ख़ुदा जाने अभी कितने दिन बीतते जाएँगे ।

शेख साहिब का बार-बार वादा करना और फिर भंग करना स्पष्ट कर रहा है कि वह अब किसी संकट में ग्रस्त हो रहे हैं । अभी तीन दिन पहले की बात है कि एक संक्षिप्त सूचना मुझको अमृतसर से पहुँची कि कुछ मौलवी लोग कहते हैं कि इस मुबाहसे में अगर मसीह के जीवन और मृत्यु के बारे में बहस होती तो हम इस समय अवश्य डाक्टर क्लार्क साहिब के साथ शामिल हो जाते । इसलिए सामान्य तौर पर शेख जी और उनके दूसरे मित्रों को केवल सूचना ही नहीं अपितु क़सम दी जाती है कि यह ज्वर भी निकाल लो । मसीह के जीवन और मृत्यु के बारे में डाक्टर साहिब के साथ अवश्य बहस होगी नि:सन्देह उसकी सहायता करो ।

واعلموا ان اللّٰہ یخزی الکاذبین وآخر دعوانا ان الحمدللّٰہ رب العالمین۔

डाक्टर मार्टन क्लार्क साहिब के एक भ्रम का निवारण

डाक्टर साहिब ने 12 मई 1893 ई. के अपने अखबार में जो लुधियाना के अखबार "नूर अफ़शाँ" में परिशिष्ट के तौर पर छपा है, शेख बटालवी साहिब की किताब इशाअतुस्सुन्ना से यह धोखा खाया है या लोगों को धोखा देना चाहा है कि मानो उपाधिप्राप्त इस्लामी विद्वान इस विनीत को काफिर ठहराते हैं । इसलिए सामान्य और विशेष हर एक की जानकारी के लिए लिखा जाता है कि इस्लाम के समस्त मान्य विद्वान जिनको खुदा तआला ने ज्ञान, कर्म और ईमानी दक्षता का प्रकाश प्रदान किया है वे मेरे साथ हैं और इस समय चालीस के निकट हैं और विपक्षी के साथ अधिकतर ऐसे लोग हैं जो केवल नाम के मौलवी हैं और ज्ञान एवं कर्म की विशेषताओं

से खाली हैं । अगर इस विनीत का यह बयान डाक्टर साहिब की दृष्टि में अतिशयोक्ति का चरितार्थ न हो तो डाक्टर साहिब किसी ऐसे मुबाहसे में जो विरोधियों के उलमा और इस विनीत की जमाअत के उलमा के मध्य हो, स्वयं शामिल होकर देख लें अपितु शीघ्र ही 15 जून 1893 ई. तक एक ऐसा मुबाहसा होने वाला है जिसमें प्रतिपक्ष मौलवी गुलाम दस्तगीर और उनके सहपंथी सारे उलमा लाहौर के होंगे और इस तरफ से कोई एक या दो विद्वान मुकाबले के लिए प्रस्तावित किए जाएँगे । फिर पादरी साहिब स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हैं कि ख़ुदाई विद्वान और विश्वस्त प्रकाण्ड विद्वान किस तरफ़ हैं और नाम के मौलवी और अनर्गल भाषी किस तरफ ।

कहावत मशहूर है कि :-

شنیدہ کے بود مانند دیدہ*

एक तंग दिल दुश्मन की क़लम से जो निकले वह एकतरफा बयान बुद्धिमान की दृष्टि में कदापि महत्व नहीं रखता, अपितु हर एक सच्चाई परीक्षा के समय खुलती है ।

इसके अतिरिक्त डाक्टर साहिब यह भी जानते हैं कि इस्लाम के विश्वस्त विद्वानों का मुख्य केन्द्र मक्का और मदीना है (अल्लाह उनकी प्रतिष्ठा और महानता को और बढ़ाए) । इस्लाम में अरब के विशेषकर यही दो शहर मक्का और मदीना धर्म के प्रमुख केन्द्र समझे जाते हैं। अत: इन बाबरकत स्थानों के सपूत और उपाधिप्राप्त विद्वान भी इस विनीत के साथ शामिल होते जाते हैं । अत: नमूना के तौर पर तीन लोगों के पत्रों को नीचे लिखता हूँ ।

(इस विनीत की किताब ''आईना कमालाते इस्लाम'' और प्रचार की उच्चकोटि की अलंकृत शैली पर, अरब के एक विद्वान की साक्ष्य जो एक बड़े शहर में साहित्य शास्त्र इत्यादि के

* अनुवाद :- सुनी सुनाई बात आंखों देखी जैसी कैसे हो सकती है ।
(अनुवादक)

अध्यापक हैं)

श्रीमान मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद याकूब साहिब देहरादून से लिखते हैं कि मैं इस बात पर विश्वास रखता हूँ कि आप युग के इमाम हैं और अल्लाह की ओर से समर्थनप्राप्त हैं । उलमा को अल्लाह तआला ने अवश्य आपका शिकार बनाया है या ग़ुलाम । आपका विरोधी कभी सफल न होगा । मुझे अल्लाह तआला आपके सेवकों में ज़िन्दा रखे और उसी में मारे । हे ख़ुदा ! तू ऐसा ही कर । अरब के एक विद्वान इस समय मेरे पास बैठे हैं । शाम क्षेत्र के निवासी हैं, सैयद हैं, बड़े साहित्यकार हैं और हज़ारों शेर शुद्ध अरबी के कंठस्थ हैं । उनसे आपके बारे में वार्तालाप हुई । वह विद्या का समुद्र और कहां मैं केवल साधारण आदमी परन्तु तवफ़्फ़ा के अर्थ में कुछ बन न पड़ा । आपकी इबारत 'आईना कमलाते इस्लाम' जो अरबी है उनको दिखाई गई । कहा, ख़ुदा की क़सम ऐसी इबारत अरब वासी नहीं लिख सकता हिन्दुस्तानी की क्या सामर्थ्य । फिर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में आपके द्वारा लिखा गया स्तुति काव्य (क़सीदा) दिखाया तो पढ़कर रो पड़ा और कहा, ख़ुदा की क़सम मैंने इस ज़माने के अरबों के अश्आर को कभी पसन्द नहीं किया तो हिन्दुस्तानियों की क्या गणना परन्तु इन अश्आर को कंठस्थ करूँगा । फिर कहा खुदा की क़सम जो व्यक्ति इससे अच्छी इबारत का दावा करे चाहे वह अरब का ही रहने वाला क्यों न हो, वह धिक्कृत मुसैलिमा* कज़्ज़ाब है ।

मैं विश्वास रखता हूँ कि ख़ुदा की यह वाणी ख़ुदा के समर्थन का चमत्कार है आदमी का काम नहीं । मैं ने हज़रत को अपने प्राण, अपने घर वाले और सन्तान का स्वामी कर दिया ।

* यह व्यक्ति अरब का रहने वाला था अत्यधिक झूठ बोलने के कारण इसको कज़्ज़ाब की उपाधि दी गई थी – अनुवादक

एक अरब विद्वान का इस विनीत की ओर प्रेमपूर्ण पत्र

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

يا من انشد نسيم الاشتياق عن وسيم وصفه واستنشق عباهر الازاهر من شميم عطره وعبير عرفه احيط حضرتک العالية باسرار الا سرار واعيذ سعادتک السامية من نوائب الا قد ار لا زالت سفن نجاتک تجری فی بحار العلوم والو ية سيادتک معقودة لحل اشكالات المنطوق والمفهوم ولا برحت الجباه لعلوحضرتک ساجدة والافواه بالثناء على محاسن ذاتک شاهدة لا احصى ثنائى عليک ولا دعائى وشوقى اليک السلام عليكم ورحمة اللّٰه و بركاته تحية عن ودٍّ اكيدٍ و قلب لم يكدره تنكيد اما بعد فان راقم الاحرف قدهبت به نسيم الامال و زعزعته لواعج الانتقال حتى قذفته سهام الا قدار فی بلدة هذه الديار فجمعته طرق الا تفاق بتقدير الملک الخلاق بالاخ الرفيق والمولى الشفيق الحافظ المولوى محمد يعقوب وقاه الله من ورطات العيوب و وهدات الذنوب في بلدة دهره دون لازال رحبها بالمواهب الالٰهية مشحون فاخذنا نجنى ثمار الاخبار و ندير اقداح التذكار عما مضٰى و تقدم من الازمان والاثار حتى افضى بنا الحديث الى هذا الزمان فذكرت حضرتكم العلية فسئلتهٗ عن بيانها بوجه

التفصيل والايضاح فاخبرنى بالجناب ومناقبه بماكان اهلا له حتى ثنى عنان فكرى واستمال عطف خاطرى الى مشاهدة الذات لما سمعت من بديع الصفات اذا الكلام صفة لقائله ولا يخفى مافى المشاهدة من عميم الفائدة ولذلک طلبها الكليم عليه السلام ولم يمنعنى من تلک الامشقة الطريق و توقد الرمضاء واصفرار اليد وخرق الجيب وعدم الراحلة (شعر)

ولو انّى اطير لطِرت شوقا   اليک ولم اكن عن ذالک ناحى

ولكن اجنحى قصت وّ صيرت   وكيف يطير مقصوص الجناح

وعلى كل حال فان عدم ذلک بالاقدام فممكن ان يكون بالاقلام لاسيما وقدقيل القلم احد اللسانين والمراسلة نصف المواصلة ولكن ليس الخبر كالعيان اذهو عين اليقين الاانا اذا فقدنا الماء صرنا الى بديله. والسلام

अनुवाद :- हे वह महान हस्ती जिसकी विशेषताओं के सौन्दर्य में शीतल मन्द समीर मधुर स्वर में गाती है, नर्गिस और चमेली जिसके इत्र की लपट और सुगंध की गंध से सुगन्धित है । सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्य आपकी महान हस्ती को परिधि में लिए हुए हैं । आप ख़ुदाई प्रारब्ध की विपत्तियों से अल्लाह की शरण में रहें । आपके मुक्तिदायक जहाज़ ज्ञान रूपी सागरों में हमेशा चलते रहें और आपके पथ प्रदर्शन के झण्डे अर्थों और व्याख्याओं की बाधाओं को दूर करने के लिए सदैव उत्कृष्ट रहें । आपकी महानता के समक्ष हर एक सर नतमस्तक रहे और जीभें आपकी विशेषताओं की प्रशंसा पर साक्षी रहें । मेरा आपकी प्रशंसा करना, आपके लिए दुआ करना और आपसे मिलने की लालसा रखना, बयान

से बाहर है । अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू । सलाम का यह उपहार अत्यन्त प्रेम और ऐसे दिल की ओर से है जो किसी गंदगी में लिप्त नहीं । इसके बाद (निवेदन है कि) इस पत्र लेखक को आशाओं की शीतल समीर लिए चली और घूमने फिरने की भीषण उत्कंठा ने घर से बेघर किया और प्रारब्ध के तीरों ने उसे इस देश के इस शहर में ला फेंका तो संयोगवश भाग्यविधाता ने उसे प्रिय भ्राता और हमदर्द मित्र हाफ़िज़ मौलवी मुहम्मद याकूब साहिब से मिला दिया (उसका दामन खुदा की अनुकम्पाओं से सदैव भरा रहे) । अल्लाह उन्हें देहरादून के शहर में दोषों के दलदल और गुनाहों के गढ़ों में पड़ने से बचाए रखे । अत: हम परस्पर विचारों के आदान-प्रदान से परिस्थितियों की जानकारी लेने लगे और भूत और प्राचीन युग की घटनाओं एवं निशानों की चर्चा होने लगी । यहाँ तक कि बातचीत इस युग तक आ पहुँची और आप की महान हस्ती का वर्णन हुआ और मैंने उनसे आपके बारे में स्पष्ट और विस्तारपूर्वक जानना चाहा तो उन्होंने मुझे आँजनाब और आपकी हैसियत के यथायोग्य यशोगान के बारे में बताया यहाँ तक कि आपकी अनुपम विशेषताएँ सुनने के कारण मेरे विचार का प्रवाह और झुकाव आँजनाब की हस्ती के दर्शन की ओर हो गया । कलाम, कलाम करने वाले के गुण-दोषों को प्रकट करने वाला दर्पण होता है और मुलाक़ात में जो बड़ा फ़ायदा है वह किसी से छुपा नहीं । इसीलिए हज़रत मूसा ने इसकी दुआ की थी परन्तु मार्ग के कष्ट की गर्मी की जलन, कमज़ोरी, धन की कमी और सवारी का न होना मेरे मार्ग में बाधित हुआ है ।

(शे'र) अगर मुझ में उड़ने की शक्ति होती तो मैं शौक़ से आपकी ओर उड़ आता और कदापि इससे पीछे न हटता परन्तु मेरे पंख कटे हुए हैं और पंख कटा हुआ पक्षी कैसे उड़ सकता है ?

बहरहाल अगर यह मुलाकात आमने-सामने नहीं तो पत्र-व्यवहार के द्वारा ही सही, विशेषकर जबकि कहावत मशहूर है कि लेखनी दो जीभों में से एक है और पत्र आधी मुलाक़ात है तथापि

सुनी सुनाई बात देखी हुई बात जैसी नहीं होती क्योंकि वह आंखों देखा विश्वास है । हाँ जब वह पानी नहीं पाते तो उसके बदल की ओर आकृष्ट होते हैं ।   वस्सलाम

इस विनीत की ओर से अरब विद्वान को जवाबी प्रेम-पत्र

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

نحمده و نصلی علی رسوله الکریم

السلام علیکم ورحمة الله وبرکاته.امابعد فاعلم یا محبی ومخلصی قد وصلنی کتابکم العزیز واذا فتحته ونظرت الیه قرأته وفهمت مافیه فاذا هومن حب حفی وتقی وفهیم وذکی ناقد بصیر ذی رأی صائب وعقل عزیز الی فقیر. عرضة تکفیرٍ. مهجور صغیرٍ و کبیرٍ. فحمدت اللّٰه علی انه وهب لی کمثلک محبًا مسلیًا من العرب العرباء وبشرنی به نسیم محبة تلک الشرفاء وکنت قد نمقت کتابًا لارسله الی دیار العرب والشام لعلی انصر من تلک الکرام فوجدت مکتوبک فی اسعد الایام وحسبته باکورة جنی العرب وتفألتُ به لاصلاح الشرق والغرب. وتاقت نفسی ان اوطنی ا ـ الله ثراک لافوّز بمراک. یااخی ان علماء هذه الدیار قد اکفرونی وکذبونی ورمونی بالبهتانات. وتمایلوا علیّ باللعن والطعن والهذیانات. فبرئت من تلک العلماء وعلمهم. ولحقت بمن یشک فی سلمهم وانی

اری خـواطـرهـم تشـابه خواطر الیهود. فی ظن السوء والتجاسر امام الـرب الـمـعبـود. اصـروا علی اکفاری وجاهدوا لاضراری. وکفروا مـؤمـنـا مـوحـدا فـی التحریر والتقریر. وما ندموا علی بادرة التکفیر وظـنّـوا ان الـوقـت لیـس وقـت ظهـور مـجـدد یجدّد الدّین. ویرجم الشیـاطیـن. امـا رأوا ان الـغـاسـق قـد وقب و مهجّة الخیر قد انتقب. والـعـدوصـال عـلـی حصن الاسلام ونقب. واخذ الظلام موضع النور وعـقـب. وظهـر قـوم عـلـی الارض یـعبـد الـصّلیب ویتخذ الهًا العبد الـضـعیف الـغـریـب. و یـضل البعید والقریب. مافی یدیهم الا المکر والـزور. اوالـمـال الـمـوفور. فتهوی الیهم العُمی والعُور. ودخل فی شـرکهـم الـزمـر والـجـمهـور. وعسـی ان یـدرک هـذا لعطب اکثر المسلمین. ویفنون من ایدی المغتالین. فنظر الله الی الامة المرحومة ووجـدهـم الـمستضعفین. فارسل عبدًا من عباده لیجدّد الدّین ویقیم البـراهیـن. یـااخی ان هذه الایام لیل دامس. وطریق طامس. فرئ الله تـعـالی مفَاسد هذاالزمان وتطایر فتن الدوران. وظلام الکفر والطغیان وقیـام الـخلق علی شفاء النیران. فاعطی بفضله مصباحاً یؤمنهم العثار ویـنیر السّنن والآثار وانی قصّصت علیکم بعض هذه الآلام لتُدرککم رقة عـلـی غـربة الاسـلام. فـانـی اراک فتًـی صالحًا ومن المخلصین الـمـحبّیـن وقد اسررتنی بکلمات محبتک وسلّیت باقوال مودتک غـریبـا مهـجـور الـقوم و مورد الطعن واللوم فجزاک اللّٰه ورحمک

وهو ارحم الراحمين. آمين

الراقم العبد الضعيف مهجور القوم غلام احمد عفى عنه

अनुवाद :–

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल् करीम

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

हे मेरे प्यारे और सच्चे मित्र आपको ज्ञात हो कि आपका प्यार भरा पत्र मुझे मिला । जब मैंने उसे खोलकर देखा और पढ़ा और जो उसमें लिखा हुआ था उसे समझा तो ज्ञात हुआ कि यह एक ऐसे मित्र की ओर से है जो सच्चा, संयमी, समझदार, मनीषी, जाँच परख करने वाला प्रतिभाशाली, शुद्ध और ठीक राय देने वाला बुद्धिमान और दूरदर्शी है । जो उसने इस विनीत की ओर लिखा है वह कुफ्र के फ़त्वे का निशाना और हर छोटे-बड़े का ठुकराया हुआ है ।

अत: मैंने आप जैसा सांत्वना देने वाला और अरबों में से विशेषकर प्यार देने पर अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया और उसके द्वारा अल्लाह तआला ने मुझे उन नेक लोगों की मुहब्बत की खुशबू की खुशखबरी दी और मैंने इस आशा से अरब और शाम (सीरिया) इत्यादि के देशों में भिजवाने के लिए एक किताब लिखी है ताकि उन प्रतिष्ठित लोगों से समर्थन पाऊँ । अत: मुझे इन शुभ दिनों में तुम्हारा पत्र मिला तो मैंने उसे अरब के फलों में से पहला फल समझा और उसे पूरब तथा पश्चिम के सुधार हेतु शुभ शकुन गुमान किया और मेरे दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि अल्लाह मुझे तुम्हारी धरती में ले जाए ताकि मैं आपके दर्शन कर सकूँ ।

हे मेरे भ्राता ! इस देश के उलमा ने मुझे काफ़िर ठहराया, मुझे

झुठलाया और मुझ पर तरह-तरह के आरोप लगाए हैं और भर्त्सना और निरर्थक बकते हुए मुझ पर टूट पड़े हैं और मैं उन उलमा और उनके ज्ञान से विमुख हूँ और मैं उनमें शामिल हो गया हूँ जो उनके इस्लाम में सन्देह करते हैं । मैं बदगुमानी करने और इबादत के योग्य रब्ब के सामने धृष्टता करने में उनके दिलों को यहूद के दिलों की तरह पाता हूँ वे मुझे काफ़िर ठहराने पर अडिग हैं और उन्होंने मुझे कष्ट देने का हर सम्भव प्रयास किया है और एक खुदा पर ईमान रखने वाले मोमिन को लेख और भाषणों में काफ़िर ठहराया और कुफ़्र का फत्वा देने में जल्दबाज़ी करने पर शर्मिन्दा नहीं हैं और समझते हैं कि यह समय एक ऐसे मुजद्दिद के प्रकट होने का नहीं जो धर्म को फिर से जीवित करे और शैतानों को धुत्कारे । क्या वे नहीं देखते कि अन्धकार छा गया है और कल्याण का मार्ग अंधकारमय हो गया है और शत्रु इस्लाम के क़िले पर आक्रमणकारी और सेंध लगा रहा है और पथभ्रष्टता ने धर्म की जगह ले ली है और छा गई तथा धरती पर वह क़ौम आधिपत्य पा गई जो सलीब की इबादत करती है और असहाय मनुष्य को उपास्य बनाती है और दूर एवं निकट वालों को पथभ्रष्ट कर रही है । उनके हाथ में केवल झूठ, धोखाधड़ी और अत्यधिक धन है । इसलिए अज्ञानी और भौतिकवादी उनकी ओर खिंचे जा रहे हैं और दल के दल उनके के जाल में फँस गए हैं । सम्भव है यह विनाश अधिकांश मुसलमानों को अपने पंजे में ले ले और वे इन धोखेबाज़ों के हाथों नष्ट हो जाएँ ।

अत: अल्लाह तआला ने इस दयनीय क़ौम की ओर देखा और उसे कमज़ोर पाया तो उसने अपने भक्तों में से एक भक्त को फिर से धर्म को जीवित और समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए भेज दिया । हे मेरे भ्रात ! ये दिन भयानक काली रात के समान हैं और सन्मार्ग के निशान मिट चुके हैं । अत: अल्लाह तआला ने इस युग की बुराइयों, समय के उपद्रवों और उद्दण्डता के अन्धकार

को देखा और लोगों को आग के किनारे पर खड़ा पाया, तो उन्हें अपनी ओर से एक दीपक प्रदान किया जो उन्हें ठोकरों से बचाता और मार्ग और उसके निशानों को रोशन करता है । मैंने उन दु:खों में से कुछ दु:ख तुम्हारे सामने बयान किए हैं ताकि इस्लाम के असहाय होने पर तुम्हारे दिल में आर्द्रता पैदा हो । मैं तुम्हें नेक युवा सदभावक और मित्र समझता हूँ । तुमने अपने प्रेम पूर्ण वाक्यों से मुझे खुश किया है और अपनी प्यार भरी बातों से इस असहाय और क़ौम के परित्यक्त और भर्त्सना के पात्र को सांत्वना दी है ।

अत: अल्लाह तुम्हें इसका प्रतिफल दे । तुम पर दयादृष्टि करे और वही सब से बढ़कर दयादृष्टि करने वाला है । आमीन !

लेखक
असहाय एवं लोगों का परित्यक्त
गुलाम अहमद उफ़िया अन्हो

अरब मूल के एक मक्का वासी विद्वान का पत्र

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصّلوۃ والسلام علی اشرف الخلق اجمعین الی حضرۃ الجناب المحترم المکرم العزیز الاکرم مولانا ومرشدنا وھادینا ومسیح زماننا غلام احمد حفظہ اللہ تعالٰی آمین ثُم آمین یارب العٰلمین. امابعد السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ قد وصلنا کتابکم العزیز و قرئنا وفھمنا مافیہ وحمدنا اللہ الذی انتم بخیر وعافیۃ ویا سیدی اطلب من اللہ ثم من جنابکم العفو والسماح فیما قداخطئت ویا سیدی انا ولدک وخادمک ومحسوب علی اللہ ثم

الی جنابکم و ان شاء اللہ تعالی انا تبت وعزمت علی ان لا اعود ابدًا
ولا اتکلم بمثل الکلام الذی ذکر قط جمّل اللہ حالکم و شکر اللہ
فضلکم والسلام الراقم احقر العباد محمد ابن احمد مکّی
قد عجبنی الکلام الذی ذکرتم فی الکتاب. الحمد للہ الذی وعدنی
بملاقات جنابکم لا شک ولاریب انک انت من عند اللہ اٰمنا
وصدقنا واٰخر دعوانا ان الحمد للہ رب العٰلمین.
راقم محمد ابن احمد مکّی

अनुवाद :-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएँ समस्त लोकों के पालनहार अल्लाह के लिए हैं और समस्त लोगों में से महान व्यक्ति सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलामती हो ।

आदरणीय और प्रतिष्ठित हमारे स्वामी, हमारे पथप्रदर्शक और युग के मसीह हज़रत गुलाम अहमद साहिब अल्लाह आपकी रक्षा करे, आमीन ! पुन: आमीन हे समस्त लोकों के प्रतिपालक !

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

हमें आपका प्यार भरा पत्र मिला । हमने उसे पढ़ा और उसके लेख को समझा और आपके कुशल मंगल होने पर अल्लाह का धन्यवाद किया । हुज़ूर मैं अल्लाह तआला और फिर आप से अपनी की हुई ग़ल्तियों पर क्षमायाचक हूँ । हुज़ूर मैं आपका बेटा और सेवक हूँ और अल्लाह के सामने और आपके पास उत्तरदायी हूँ और मैंने तौबा की और प्रतिज्ञा की है कि अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं उस तरफ अब नहीं लौटूँगा और पूर्ववत बातों के समान बातें कभी न

करूँगा । अल्लाह आपके हालात मंगलमय करे और आपकी कृपा और उपकार का क़द्रदान हो । लेखक

अति विनीत

मुहम्मद बिन अहमद मक्की

आपने पत्र में जो बातें लिखी हैं वे मुझे अच्छी लगती हैं । समस्त प्रशंसाएँ उस अल्लाह के लिए हैं । ख़ुदा का आभार जिसने मुझे आपसे मिलने के लिए आशान्वित किया है । आपके अल्लाह की ओर से होने में कोई सन्देह और संशय नहीं । हम ईमान लाते हैं और सत्यापन करते हैं और हमारी अन्तिम बात यही है कि समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं जो समस्त लोकों का पालनहार है ।

लेखक

मुहम्मद बिन अहमद मक्की

एक अरब विद्वान सैयद अली पुत्र शरीफ़ मुस्तफ़ा अरब के पत्र का सारांश

सैयद साहिब अरब ने एक लम्बे पत्र में बहुत से शेर पद्य में स्तुति के तौर पर और एक लम्बी इबारत गद्य में प्रशंसा के तौर पर लिखी है । अत: उसकी लम्बी इबारतों में से यह इबारत भी है ।

الی جناب الاجل الناقد البصیر طود العقل الغزیر وکوکب الشرق المنیر ذی الحزم والھام اللہ الکبیر صاحب الالھام رکن الدولۃ الابدیۃ سلطان الرعیۃ الاسلامیۃ میرزا غلام احمد. فضائلہ تلوح کالکوکب فی الاٰفاق للجاھل والعاقل بحر الندی الذی لا یرٰی لہ الساحل ومنبع العلوم وٓا لعطایا التی ھی صافیۃ المناھل.

अनुवाद :- सेवा में श्रीमान दूरदर्शी और प्रतिभाशाली एवं तीक्ष्ण बुद्धि और विवेक रखने वाले पूरब के प्रकाशमान सितारे,

सतर्क तथा परिणाम को दृष्टिगत रखने वाले, महानतम खुदा के भेजे हुए, अनश्वर बादशाहत के सदस्य और इस्लामी प्रजा के बादशाह मिर्ज़ा गुलाम अहमद ।

आपकी श्रेष्ठताएं हर मूर्ख और बुद्धिमान के लिए संसार में सितारों की भाँति चमक रही हैं । आप दान और अनुकम्पा के अपार सागर हैं आप ज्ञान एवं दान और अनुकम्पा का ऐसा उद्गम हैं कि जिसके घाट अत्यन्त शुद्ध और स्वच्छ हैं ।

आशा है कि किसी दूसरे अवसर पर इस अरब विद्वान का क़सीदा और विस्तारपूर्वक पत्र भी प्रकाशित कर दिया जाएगा । अभी साक्ष्य के तौर पर इतना पर्याप्त है ।

डाक्टर मार्टन क्लार्क और अन्य ईसाइयों के वकील मिस्टर अब्दुल्लाह आथम का पराजित होने की अवस्था में मुसलमान हो जाने का वादा

हम इस समय मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब भूतपूर्व अतिरिक्त असिस्टेंट वर्तमान में पेन्शन प्राप्त अमृतसर का वह वादा नीचे लिखते हैं जो उन्होंने डाक्टर मार्टन क्लार्क साहिब और जंडियाला के ईसाइयों के वकील होने की हैसियत से पराजित हो जाने की अवस्था में मुसलमान होने के लिए किया है । महोदय ने अपने इक़रारनामा में स्पष्ट रूप से इक़रार किया है कि अगर वह न्यायिक बहस की दृष्टि से या किसी चमत्कार के देखने से पराजित हो जाएँगे तो इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेंगे और वह यह है :-

मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहिब के 09 मई 1893 ई. के पत्र की प्रतिलिपि

स्थान अमृतसर

श्रीमान मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान

इस्लाम की तर्क पूर्ण निर्णायक बहस के सन्दर्भ में निवेदन है कि अगर श्रीमान स्वयं या अन्य कोई सज्जन किसी तरह से भी अर्थात चमत्कार या अकाट्य तर्कों की चुनौती के रूप में ख़ुदा तआला की विशेषताओं के अनुसार क़ुरआन की शिक्षाओं को संभव और बुद्धि संगत सिद्ध कर सकें तो मैं इक़रार करता हूँ कि मुसलमान हो जाऊँगा । श्रीमान मेरी यह सनद अपने हाथ में रखें शेष मंजूरी से मुझे क्षमा रखिए कि अखबारों में विज्ञापन दूँ ।

हस्ताक्षर

मिस्टर अब्दुल्लाह आथम

अब्दुल हक़ ग़ज़नवी के घोषणापत्र के उत्तर में मुबाहले की घोषणा

26 शव्वाल 1310 हिजरी

26 शव्वाल 1310 हिजरी का अब्दुल हक़ ग़ज़नवी द्वारा प्रकाशित मुबाहले का एक घोषणापत्र विनीत की दृष्टि से गुज़रा । इसलिए यह घोषणा पत्र प्रकाशित किया जाता है कि मुझे उस व्यक्ति से और ऐसे हर एक कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले से जो विद्वान या मौलवी कहलाता है मुबाहला स्वीकार है । अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं तिथि 03 या 04 ज़ीक़ादा सन् 1310 हिजरी तक अमृतसर में पहुँच जाऊँगा और मुबाहले की तिथि 10 ज़ीक़ादा और वर्षा इत्यादि होने की दशा में 11 ज़ीक़ादा निर्धारित हुई है । जिससे किसी दशा में देरी स्वीकार्य न होगी । मुबाहले का स्थान मस्जिद खान बहादुर के निकट ईदगाह का मैदान निर्धारित हुआ है । चूँकि दिन के पहले भाग में लगभग बारह बजे तक ईसाइयों से इस्लाम की सच्चाई के बारे में इस विनीत का मुबाहसा होगा और यह मुबाहसा लगातार बारह दिन तक होता रहेगा । दो बजे से

शाम तक मुझे फुर्सत मिलेगी । इसलिए कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले जो मुझे काफ़िर ठहराकर मुझसे मुबाहला करना चाहते हैं इस अन्तराल में 10 ज़ीक़ादा को या किसी रोक पड़ने की दशा में 11 ज़ीक़ादा सन् 1310 हिजरी को मुझसे मुबाहला कर लें । 10 ज़ीक़ादा की तिथि इस लिए निर्धारित की गई है ताकि दूसरे उलमा भी जो इस विनीत कलिमा का इक़रार करने वाले मुसलमान को काफ़िर ठहराते हैं मुबाहले में शामिल हो सकें । जिनमें से मुहीउद्दीन लखूके वाले, मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब और शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी, मुंशी सा'दुल्लाह अध्यापक हाई स्कूल लुधियाना, अब्दुल अज़ीज़ धर्मोपदेशक लुधियाना, मुंशी मुहम्मद उमर भूतपूर्व कर्मचारी निवासी लुधियाना, मौलवी मुहम्मद हसन साहिब प्रमुख लुधियाना और मियाँ नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी, पीर हैदर शाह साहिब, हाफ़िज़ अब्दुल मन्नान वज़ीराबादी, मियाँ अब्दुल्लाह टोंकी, मौलवी गुलाम दस्तगीर क़सूरी, मौलवी शाहदीन साहिब, मौलवी मुश्ताक अहमद साहिब अध्यापक हाई स्कूल लुधियानवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी मुहम्मद अली धर्मोपदेशक निवासी बोपराँ ज़िला गुजरांवाला, मौलवी मुहम्मद इस्हाक़, सुलैमान निवासी रियासत पटियाला, ज़हूरुल हसन सज्जाद: नशीन बटाला, मौलवी मुहम्मद कर्मचारी करमबख्श प्रेस लाहौर इत्यादि । अगर ये लोग हमारी ओर से रजिस्टर्ड घोषणापत्र पहुँचने के बावजूद मुबाहले के मैदान में उपस्थित न हुए तो यह इस बात का एक पक्का प्रमाण होगा कि वे वास्तव में अपने कुफ़्र के फ़त्वे की आस्था में स्वयं को झूठा और अन्यायी और अनर्थ पर समझते हैं, विशेषकर सबसे पहले शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब लेखक इशाअतुस्सुन्ना का कर्तव्य है कि मुबाहला के लिए मैदान में निर्धारित तिथि पर अमृतसर में आ जाएं क्योंकि मुबाहला के लिए उसने स्वयं निवेदन भी किया है । अत: स्मरण रहे कि हम बार-बार मुबाहला करना

नहीं चाहते क्योंकि मुबाहला कोई हँसी खेल नहीं । कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले समस्त लोगों का अभी ही फैसला हो जाना चाहिए । अत: अब हमारे घोषणापत्र प्रकाशित होने के बाद जो व्यक्ति पलायन करेगा और निर्धारित तिथि पर उपस्थित नहीं होगा, भविष्य में उसे कोई अधिकार न होगा कि फिर कभी मुबाहले का निवेदन करे, वह व्यक्ति निर्लज्ज समझा जाएगा जो पीठ पीछे काफ़िर कहता फिरे । अत: समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए रजिस्ट्री कराकर यह घोषणापत्र भेजे जा रहे हैं ताकि इसके बाद कुफ़्र का फत्वा देने वालों के पास कोई बहाना शेष न रह जाए । अगर इसके बाद कुफ़्र का फ़त्वा देने वालों ने मुबाहला न किया और न कुफ़्र का फ़त्वा देने से रुके तो हमारी तरफ़ से उन पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो गया । अन्तत: यह भी स्मरण रहे कि मुबाहला से पहले हमारा अधिकार होगा कि हम कुफ़्र का फ़त्वा देने वालों के सामने सार्वजनिक जलसे में अपने इस्लाम की आस्थाओं को प्रस्तुत करें ।

सलामती हो उस पर जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया ।

उद्घोषक
विनीत
मिर्ज़ा गुलाम अहमद
30 शव्वाल सन् 1310 हिजरी

समझाने के अन्तिम प्रयास की पूर्णता

अगर शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी 10 ज़ीक़ादा सन् 1310 हिजरी को मुबाहला के लिए उपस्थित न हुआ तो उसी दिन से समझा जाएगा कि वह भविष्यवाणी जो उसके बारे में प्रकाशित की गई थी कि वह काफ़िर कहने से तौबा करेगा पूरी हो गई । अन्त में मैं दुआ करता हूँ कि हे सामर्थ्यवान ख़ुदा ! उस अत्याचारी और उद्दंड और

नितान्त उपद्रवी पर ला'नत और अपमान की मार डाल, जो अब इस मुबाहला के चैलेन्ज और शहर और स्थान और समय के निर्धारण के बाद भी मुबाहला के लिए मेरे मुक़ाबले पर मैदान में न आए, और न काफ़िर-काफ़िर कहने और गाली गलौज करने से रुके । तथास्तु

يا ايها المكفّرون تعالوا الى امر هو سنة الله و نبيه لافحام المكفّرين المكذّبين. فان توليتم فاعلموا ان لعنة الله على المكفّرين الذين استبان تخلفهم و شهد تخوفهم انهم كانوا كاذبين. المشتهر مرزا غلام احمد قادياني

(अनुवाद :- हे कुफ़्र का फ़त्वा देने वालो ! उस बात की तरफ आओ जो अल्लाह और उसके रसूल का विधान है ताकि कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले झूठों को आसमानी निशानों से चुप किया जा सके । अगर तुम ने पलायन किया तो जान लो कि उन काफ़िरों पर अल्लाह की ला'नत होगी जिनका वादा भंग करना खुल गया और उनके भयभीत होने ने प्रमाणित कर दिया कि वे झूठे थे - अनुवादक)

इसमें कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले समस्त उलमा को निर्धारित तिथि 10 ज़ीक़ादा सन् 1310 हिजरी को अमृतसर में मुबाहला के लिए बुलाया गया है ।